सत्यं शिवं सुन्दरम्

॥ श्रीराम ॥

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित

श्रीरामचरितमानस

[सचित्र, सटीक, मोटा टाइप]

श्री सहित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे॥

टीकाकार—हनुमानप्रसाद पोद्दार

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीरामचरितमानसकी

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
१- नवाह्नपारायणके विश्राम-स्थान	१२
२- मासपारायणके विश्राम-स्थान	१२
३- पारायण-विधि	१३
बालकाण्ड	
४- मंगलाचरण	१७
५- गुरु-वन्दना	१९
६- ब्राह्मण-संत-वन्दना	२०
७- खल-वन्दना	२३
८- संत-असंत-वन्दना	२४
९- रामरूपसे जीवमात्रकी वन्दना	२७
१०- तुलसीदासजीकी दीनता और रामभक्तिमयी कविताकी महिमा	२८
११- कवि-वन्दना	३५
१२- वाल्मीकि, वेद, ब्रह्मा, देवता, शिव, पार्वती आदिकी वन्दना	३६
१३- श्रीसीताराम-धाम-परिकर-वन्दना	३८
१४- श्रीनाम-वन्दना और नाम-महिमा	४१
१५- श्रीरामगुण और श्रीरामचरितकी महिमा	४९
१६- मानसनिर्माणकी तिथि	५५
१७- मानसका रूप और माहात्म्य	५६
१८- याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद तथा प्रयाग-माहात्म्य	६६
१९- सतीका भ्रम, श्रीरामजीका ऐश्वर्य और सतीका खेद	७१
२०- शिवजीद्वारा सतीका त्याग, शिवजीकी समाधि	७७
२१- सतीका दक्ष-यज्ञमें जाना	८२
२२- पतिके अपमानसे दुःखी होकर सतीका योगाग्निसे जल जाना, दक्ष-यज्ञ-विध्वंस	८३
२३- पार्वतीका जन्म और तपस्या	८४
२४- श्रीरामजीका शिवजीसे विवाहके लिये अनुरोध	९३
२५- सप्तर्षियोंकी परीक्षामें पार्वतीजीका महत्त्व	९४
२६- कामदेवका देवकार्यके लिये जाना और भस्म होना	९८
२७- रतिको वरदान	१०२
२८- देवताओंका शिवजीसे ब्याहके लिये प्रार्थना करना, सप्तर्षियोंका पार्वतीके पास जाना	१०३
२९- शिवजीकी विचित्र बारात और विवाहकी तैयारी	१०७
३०- शिवजीका विवाह	११५
३१- शिव-पार्वती-संवाद	१२१
३२- अवतारके हेतु	१३२
३३- नारदका अभिमान और मायाका प्रभाव	१३८
३४- विश्वमोहिनीका स्वयंवर, शिवगणोंको तथा भगवान्‌को शाप और नारदका मोह-भंग	१४०
३५- मनु-शतरूपा-तप एवं वरदान	१५०
३६- प्रतापभानुकी कथा	१५९
३७- रावणादिका जन्म, तपस्या और उनका ऐश्वर्य तथा अत्याचार	१७७
३८-पृथ्वी और देवतादिकी करुण पुकार	१८५
३९-भगवान्‌का वरदान	१८८

विषय	पृष्ठ-संख्या
४०- राजा दशरथका पुत्रेष्टि यज्ञ, रानियोंका गर्भवती होना	१९०
४१- श्रीभगवान्‌का प्राकट्य और बाललीलाका आनन्द	१९२
४२- विश्वामित्रका राजा दशरथसे राम-लक्ष्मणको माँगना	२०५
४३- विश्वामित्र-यज्ञकी रक्षा	२०८
४४- अहल्या-उद्धार	२०९
४५- श्रीराम-लक्ष्मणसहित विश्वामित्रका जनकपुरमें प्रवेश	२११
४६- श्रीराम-लक्ष्मणको देखकर जनकजीकी प्रेम-मुग्धता	२१३
४७- श्रीराम-लक्ष्मणका जनकपुर-निरीक्षण	२१६
४८- पुष्पवाटिका-निरीक्षण, सीताजीका प्रथम दर्शन, श्रीसीतारामजीका परस्पर दर्शन	२२३
४९- श्रीसीताजीका पार्वती-पूजन एवं वरदानप्राप्ति तथा राम-लक्ष्मण-संवाद	२२९
५०- श्रीराम-लक्ष्मणसहित विश्वामित्रका यज्ञशालामें प्रवेश	२३५
५१- श्रीसीताजीका यज्ञशालामें प्रवेश	२४२
५२- बन्दीजनोंद्वारा जनकप्रतिज्ञाकी घोषणा	२४३
५३- राजाओंसे धनुष न उठना, जनककी निराशाजनक वाणी	२४४
५४- श्रीलक्ष्मणजीका क्रोध	२४५
५५- धनुषभंग	२५२
५६- जयमाल पहनाना	२५५
५७- श्रीराम-लक्ष्मण और परशुराम-संवाद	२६०
५८- दशरथजीके पास जनकजीका दूत भेजना, अयोध्यासे बारातका प्रस्थान	२७३
५९- बारातका जनकपुरमें आना और स्वागतादि	२८८
६०- श्रीसीता-राम-विवाह	३०६
६१- बारातका अयोध्या लौटना और अयोध्यामें आनन्द	३२६
६२- श्रीरामचरित सुनने-गानेकी महिमा	३४१
अयोध्याकाण्ड	
६३- मंगलाचरण	३४३
६४- रामराज्याभिषेककी तैयारी, देवताओंकी व्याकुलता तथा सरस्वतीजीसे उनकी प्रार्थना	३४८
६५- सरस्वतीका मन्थराकी बुद्धि फेरना, कैकेयी-मन्थरा-संवाद	३५३
६६- कैकेयीका कोपभवनमें जाना	३६२
६७- दशरथ-कैकेयी-संवाद और दशरथ-शोक, सुमन्त्रका महलमें जाना और वहाँसे लौटकर श्रीरामजीको महलमें भेजना	३६४
६८- श्रीराम-कैकेयी-संवाद	३७७
६९- श्रीराम-दशरथ-संवाद, अवध-वासियोंका विषाद, कैकेयीको समझाना	३८१
७०- श्रीराम-कौसल्या-संवाद	३८७
७१- श्रीसीता-राम-संवाद	३९४
७२- श्रीराम-कौसल्या-सीता-संवाद	४००
७३- श्रीराम-लक्ष्मण-संवाद	४०२
७४- श्रीलक्ष्मण-सुमित्रा-संवाद	४०४
७५- श्रीरामजी, लक्ष्मणजी, सीताजीका महाराज दशरथके पास विदा माँगने जाना, दशरथजीका सीताजीको समझाना	४०६
७६- श्रीराम-सीता-लक्ष्मणका वनगमन और नगर-निवासियोंको सोये छोड़कर आगे बढ़ना	४०९

विषय	पृष्ठ-संख्या
७७- श्रीरामका शृङ्गवेरपुर पहुँचना, निषादके द्वारा सेवा	४१५
७८- लक्ष्मण-निषाद-संवाद, श्रीराम-सीतासे सुमन्त्रका संवाद, सुमन्त्रका लौटना	४१८
७९- केवटका प्रेम और गङ्गा-पार जाना	४२६
८०- प्रयाग पहुँचना, श्रीराम-भरद्वाज-संवाद, यमुनातीरनिवासियोंका प्रेम	४३०
८१- तापस-प्रकरण	४३५
८२- यमुनाको प्रणाम, वनवासियोंका प्रेम	४३६
८३- श्रीराम-वाल्मीकि-संवाद	४४७
८४- चित्रकूटमें निवास, कोल-भीलोंके द्वारा सेवा	४५४
८५- सुमन्त्रका अयोध्याको लौटना और सर्वत्र शोक देखना	४६२
८६- दशरथ-सुमन्त्र-संवाद, दशरथ-मरण	४६७
८७- मुनि वसिष्ठका भरतजीको बुलानेके लिये दूत भेजना	४७३
८८- श्रीभरत-शत्रुघ्नका आगमन और शोक	४७४
८९- भरत-कौसल्या-संवाद और दशरथजीकी अन्त्येष्टि क्रिया	४७९
९०- वसिष्ठ-भरत-संवाद, श्रीरामजीको लानेके लिये चित्रकूट जानेकी तैयारी	४८४
९१- अयोध्यावासियोंसहित श्रीभरत-शत्रुघ्न आदिका वनगमन	४९६
९२- निषादकी शङ्का और सावधानी	४९९
९३- भरत-निषाद-मिलन और संवाद एवं भरतजीका तथा नगरवासियोंका प्रेम	५०३
९४- भरतजीका प्रयाग जाना और भरत-भरद्वाज-संवाद	५१२
९५- भरद्वाजद्वारा भरतका सत्कार	५२०
९६- इन्द्र-बृहस्पति-संवाद	५२४
९७- भरतजी चित्रकूटके मार्गमें	५२७
९८- श्रीसीताजीका स्वप्न, श्रीरामजीको कोल-किरातोंद्वारा भरतजीके आगमनकी सूचना, रामजीका शोक, लक्ष्मणजीका क्रोध	५३१
९९- श्रीरामजीका लक्ष्मणजीको समझाना एवं भरतजीकी महिमा कहना	५३६
१००- भरतजीका मन्दाकिनी-स्नान, चित्रकूटमें पहुँचना, भरतादि सबका परस्पर मिलाप, पिताका शोक और श्राद्ध	५३७
१०१- वनवासियोंद्वारा भरतजीकी मण्डलीका सत्कार, कैकेयीका पश्चात्ताप	५५१
१०२- श्रीवसिष्ठजीका भाषण	५५५
१०३- श्रीराम-भरतादिका संवाद	५६०
१०४- जनकजीका पहुँचना, कोल-किरातादिकी भेंट, सबका परस्पर मिलाप	५७१
१०५- कौसल्या-सुनयना-संवाद, श्रीसीताजीका शील	५७८
१०६- जनक-सुनयना-संवाद, भरतजीकी महिमा	५८४
१०७- जनक-वसिष्ठादि-संवाद, इन्द्रकी चिन्ता, सरस्वतीका इन्द्रको समझाना	५८७
१०८- श्रीराम-भरत-संवाद	५९२
१०९- भरतजीका तीर्थ-जल-स्थापन तथा चित्रकूटभ्रमण	६०३
११०- श्रीराम-भरत-संवाद, पादुका-प्रदान, भरतजीकी विदाई	६०६

विषय	पृष्ठ-संख्या
१११-भरतजीका अयोध्या लौटना, भरतजीद्वारा पादुकाकी स्थापना, नन्दिग्राममें निवास और श्रीभरतजीके चरित्र-श्रवणकी महिमा	६०९
अरण्यकाण्ड	
११२-मंगलाचरण.....	६१९
११३-जयन्तकी कुटिलता और फलप्राप्ति	६२०
११४-अत्रि-मिलन एवं स्तुति	६२२
११५-श्रीसीता-अनसूया-मिलन और श्रीसीताजीको अनसूयाजीका पातिव्रतधर्म कहना.....	६२५
११६-श्रीरामजीका आगे प्रस्थान, विराध-वध और शरभङ्ग-प्रसङ्ग	६२८
११७-राक्षस-वधकी प्रतिज्ञा करना	६३०
११८-सुतीक्ष्णजीका प्रेम, अगस्त्य-मिलन, अगस्त्य-संवाद, रामका दण्डक-वन-प्रवेश और जटायु-मिलन	६३१
११९-पञ्चवटी-निवास और श्रीराम-लक्ष्मण-संवाद.....	६३८
१२०-शूर्पणखाकी कथा, शूर्पणखाका खर-दूषणके पास जाना और खर-दूषणादिका वध	६४१
१२१-शूर्पणखाका रावणके निकट जाना, श्रीसीताजीका अग्नि-प्रवेश और माया-सीता	६४९
१२२-मारीचप्रसंग और स्वर्ण-मृगरूपमें मारीचका मारा जाना.....	६५२
१२३-श्रीसीताहरण और श्रीसीता-विलाप	६५७
१२४-जटायु-रावण-युद्ध.....	६५८
१२५-श्रीरामजीका विलाप, जटायुका प्रसंग	६६०
१२६-कबन्ध-उद्धार	६६५
१२७-शबरीपर कृपा, नवधा भक्ति-उपदेश और पम्पासरकी ओर प्रस्थान	६६६
१२८-नारद-राम-संवाद.....	६७४
१२९-संतोंके लक्षण और सत्संग-भजनके लिये प्रेरणा.....	६७८
किष्किन्धाकाण्ड	
१३०-मंगलाचरण.....	६८१
१३१-श्रीरामजीसे हनुमान्‌जीका मिलना और श्रीराम-सुग्रीवकी मित्रता.....	६८२
१३२-सुग्रीवका दुःख सुनाना, बालिवधकी प्रतिज्ञा, श्रीरामजीका मित्र-लक्षण-वर्णन.....	६८६
१३३-सुग्रीवका वैराग्य.....	६८९
१३४-बालि-सुग्रीव-युद्ध, बालि-उद्धार...	६९०
१३५-ताराका विलाप, ताराको श्रीरामजी-द्वारा उपदेश और सुग्रीवका राज्याभिषेक तथा अंगदको युवराजपद.....	६९३
१३६-वर्षा-ऋतु-वर्णन.....	६९५
१३७-शरद्-ऋतु-वर्णन.....	६९७
१३८-श्रीरामकी सुग्रीवपर नाराजी, लक्ष्मणजीका कोप	६९९
१३९-सुग्रीव-राम-संवाद और सीताजीकी खोजके लिये बंदरोंका प्रस्थान	७०१
१४०-गुफामें तपस्विनीके दर्शन.....	७०५
१४१-वानरोंका समुद्रतटपर आना, सम्पातीसे भेंट और बातचीत	७०५
१४२-समुद्र लाँघनेका परामर्श, जाम्बवन्तका हनुमान्‌जीको बल याद दिलाकर उत्साहित करना	७०९
१४३-श्रीरामगुणका माहात्म्य.....	७११

विषय — पृष्ठ-संख्या

सुन्दरकाण्ड

१४४-मंगलाचरण ७१३
१४५-हनुमान्‌जीका लङ्काको प्रस्थान, सुरसासे भेंट, छाया पकड़नेवाली राक्षसीका वध ७१४
१४६-लङ्कावर्णन, लङ्किनीपर प्रहार, लङ्कामें प्रवेश ७१६
१४७-हनुमान्-विभीषण-संवाद ७२०
१४८-हनुमान्‌जीका अशोकवाटिकामें सीताको देखकर दुःखी होना और रावणका सीताजीको भय दिखलाना ७२२
१४९-श्रीसीता-त्रिजटा-संवाद ७२४
१५०-श्रीसीता-हनुमान्-संवाद ७२६
१५१-हनुमान्‌जीद्वारा अशोकवाटिका-विध्वंस, अक्षयकुमार-वध और मेघनादका हनुमान्‌जीको नागपाशमें बाँधकर सभामें ले जाना ७३०
१५२-हनुमान्-रावण-संवाद ७३३
१५३-लङ्का-दहन ७३७
१५४-लङ्का जलानेके बाद हनुमान्‌जीका सीताजीसे विदा माँगना और चूड़ामणि पाना ७३८
१५५-समुद्रके इस पार आना, सबका लौटना, मधुवन-प्रवेश, सुग्रीव-मिलन, श्रीराम-हनुमान्-संवाद ७३९
१५६-श्रीरामजीका वानरोंकी सेनाके साथ चलकर समुद्रतटपर पहुँचना ७४५
१५७-मन्दोदरी-रावण-संवाद ७४७
१५८-रावणको विभीषणका समझाना और विभीषणका अपमान ७४९
१५९-विभीषणका भगवान् श्रीरामजीकी शरणके लिये प्रस्थान और शरणप्राप्ति ७५२
१६०-समुद्र पार करनेके लिये विचार, रावणदूत शुकका आना और लक्ष्मणजीके पत्रको लेकर लौटना ७५९
१६१-दूतका रावणको समझाना और लक्ष्मणजीका पत्र देना ७६२
१६२-समुद्रपर श्रीरामजीका क्रोध और समुद्रकी विनती ७६६
१६३-श्रीराम-गुणगानकी महिमा ७६९

लङ्काकाण्ड

१६४-मंगलाचरण ७७१
१६५-नल-नीलद्वारा पुल बाँधना, श्रीरामजीद्वारा श्रीरामेश्वरकी स्थापना ७७३
१६६-श्रीरामजीका सेनासहित समुद्र पार उतरना, सुबेल पर्वतपर निवास, रावणकी व्याकुलता ७७६
१६७-रावणको मन्दोदरीका समझाना, रावण-प्रहस्त-संवाद ७७७
१६८-सुबेलपर श्रीरामजीकी झाँकी और चन्द्रोदयवर्णन ७८२
१६९-श्रीरामजीके बाणसे रावणके मुकुट-छत्रादिका गिरना ७८४
१७०-मन्दोदरीका फिर रावणको समझाना और श्रीरामकी महिमा कहना ७८५
१७१-अंगदजीका लंका जाना और रावणकी सभामें अंगद-रावण-संवाद ७८८
१७२-रावणको पुनः मन्दोदरीका समझाना ८०७
१७३-अंगद-राम-संवाद ८०९
१७४-युद्धारम्भ ८११

विषय	पृष्ठ-संख्या
१७५-माल्यवान्‌का रावणको समझाना ...	८१९
१७६-लक्ष्मण-मेघनाद-युद्ध, लक्ष्मणजीको शक्ति लगना	८२४
१७७-हनुमान्‌जीका सुषेण वैद्यको लाना एवं संजीवनीके लिये जाना, कालनेमि-रावण-संवाद, मकरी-उद्धार, कालनेमि-उद्धार	८२५
१७८-भरतजीके बाणसे हनुमान्‌का मूर्च्छित होना, भरत-हनुमान्-संवाद	८२८
१७९-श्रीरामजीकी प्रलापलीला, हनुमान्‌जीका लौटना, लक्ष्मणजीका उठ बैठना	८२९
१८०-रावणका कुम्भकर्णको जगाना, कुम्भकर्णका रावणको उपदेश और विभीषण-कुम्भकर्ण-संवाद ...	८३२
१८१-कुम्भकर्ण-युद्ध और उसकी परमगति	८३४
१८२-मेघनादका युद्ध, रामजीका लीलासे नागपाशमें बँधना	८४२
१८३-मेघनाद-यज्ञ-विध्वंस, युद्ध और मेघनाद-उद्धार	८४५
१८४-रावणका युद्धके लिये प्रस्थान और श्रीरामजीका विजय-रथ तथा वानर-राक्षसोंका युद्ध	८४९
१८५-लक्ष्मण-रावण-युद्ध	८५४
१८६-रावण-मूर्च्छा, रावण-यज्ञ-विध्वंस, राम-रावण-युद्ध	८५५
१८७-इन्द्रका श्रीरामजीके लिये रथ भेजना, राम-रावण-युद्ध	८६१
१८८-रावणका विभीषणपर शक्ति छोड़ना, रामजीका शक्तिको अपने ऊपर लेना, विभीषण-रावण-युद्ध	८६७
१८९-रावण-हनुमान्-युद्ध, रावणका माया रचना, रामजीद्वारा माया-नाश	८६८
१९०-घोर युद्ध, रावणकी मूर्च्छा	८७१
१९१-त्रिजटा-सीता-संवाद	८७३
१९२-राम-रावण-युद्ध, रावण-वध, सर्वत्र जयध्वनि	८७६
१९३-मन्दोदरी-विलाप, रावणकी अन्त्येष्टि-क्रिया	८८१
१९४-विभीषणका राज्याभिषेक	८८४
१९५-हनुमान्‌जीका सीताजीको कुशल सुनाना, सीताजीका आगमन और अग्नि-परीक्षा	८८५
१९६-देवताओंकी स्तुति, इन्द्रकी अमृत-वर्षा	८८८
१९७-विभीषणकी प्रार्थना, श्रीरामजीके द्वारा भरतजीके प्रेमदशाका वर्णन, शीघ्र अयोध्या पहुँचनेका अनुरोध.	८९६
१९८-विभीषणका वस्त्राभूषण बरसाना और वानर-भालुओंका उन्हें पहनना	८९७
१९९-पुष्पकविमानपर चढ़कर श्रीसीता-रामजीका अवधके लिये प्रस्थान ..	८९९
२००-श्रीरामचरितकी महिमा	९०३
उत्तरकाण्ड	
२०१-मंगलाचरण	९०५
२०२-भरत-विरह तथा भरत-हनुमान्-मिलन, अयोध्यामें आनन्द	९०६
२०३-श्रीरामजीका स्वागत, भरत-मिलाप, सबका मिलनानन्द	९१२
२०४-राम-राज्याभिषेक, वेदस्तुति, शिवस्तुति	९१९
२०५-वानरोंकी और निषादकी विदाई ..	९२६
२०६-रामराज्यका वर्णन	९३०

विषय	पृष्ठ-संख्या
२०७-पुत्रोत्पत्ति, अयोध्याजीकी रमणीयता, सनकादिका आगमन और संवाद	९३४
२०८-हनुमान्‌जीके द्वारा भरतजीका प्रश्न और श्रीरामजीका उपदेश	९४४
२०९-श्रीरामजीका प्रजाको उपदेश (श्रीरामगीता), पुरवासियोंकी कृतज्ञता	९५०
२१०-श्रीराम-वसिष्ठ-संवाद, श्रीरामजीका भाइयोंसहित अमराईमें जाना	९५४
२११-नारदजीका आना और स्तुति करके ब्रह्मलोकको लौट जाना	९५६
२१२-शिव-पार्वती-संवाद, गरुड़-मोह, गरुड़जीका काकभुशुण्डिसे रामकथा और राम-महिमा सुनना	९५८
२१३-काकभुशुण्डिका अपनी पूर्वजन्मकथा और कलिमहिमा कहना	९९८
२१४-गुरुजीका अपमान एवं शिवजीके शापकी बात सुनना	१००१
२१५-रुद्राष्टक	१०११
२१६-गुरुजीका शिवजीसे अपराध-क्षमापन, शापानुग्रह और काकभुशुण्डिकी आगेकी कथा	१०१२
२१७-काकभुशुण्डिजीका लोमशजीके पास जाना और शाप तथा अनुग्रह पाना	१०१६
२१८-ज्ञान-भक्ति-निरूपण, ज्ञानदीपक और भक्तिकी महान् महिमा	१०२८
२१९-गरुड़जीके सात प्रश्न तथा काकभुशुण्डिके उत्तर	१०३२
२२०-भजन-महिमा	१०३६
२२१-रामायण-माहात्म्य, तुलसी-विनय और फलस्तुति	१०३८
२२२-रामायणजीकी आरती	१०४८
२२३-गोस्वामी तुलसीदासजीकी संक्षिप्त जीवनी	१०४९
२२४-श्रीरामशलाका प्रश्नावली	१०५३